

न्यायालय जिला कलक्टर, चित्तौड़गढ़ जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)**पीठासीन अधिकारी - तारा चन्द मीणा (आई.ए.एस.)**

प्रकरण संख्या 257/2021 (रे.वि.) (GCMS 2021/400)	दायर दिनांक 18.10.2021	निर्णय दिनांक 05.01.2022
---	---------------------------	-----------------------------

अनवान

जे.के. सीमेन्ट वर्क्स निम्बाहेडा, तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ (राज.) जरिये पावर ऑफ एटोर्नी होल्डर बसन्त गुप्ता उपाध्याक्ष (वाणिज्यिक), जे.के. सीमेन्ट वर्क्स निम्बाहेडा।

प्रार्थी**बनाम**

1. डमरलाल पुत्र कालूराम ब्राह्मण उम्र वयस्क निवासी फाचर अहीरान तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)।
2. मैनेजर, बडौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक जरिये शाखा प्रबंधक, शाखा मांगरोल तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)।

अप्रार्थीगण

उपस्थिति :- एमएल दक
मुकेश सारस्वत
एक तरफा

अधिवक्ता प्रार्थी
अधिवक्ता अप्रार्थी संख्या 2
अप्रार्थी संख्या 1

प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा 89 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत चूना-पत्थर खदान अहीरपुरा-निम्बाहेडा तहसील निम्बाहेडा स्थित प्रार्थी जे.के. सीमेन्ट वर्क्स निम्बाहेडा की स्वीकृत माइनिंग लीज के अन्दर प्रभावित होने वाले अप्रार्थीगणों की भूमि पर खनन करने की अनुमति व सरफेसरेन्ट पर करने बाबत

--:: निर्णय ::--

प्रकरण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी कम्पनी ने प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 89 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 के तहत इस आशय का प्रस्तुत कर निवेदन किया कि प्रार्थी कम्पनी को सीमेन्ट उत्पादन करने हेतु राजस्थान सरकार के खनन विभाग के आदेश क्रमांक/प-16(49)खान/ग्रुप-1/97 दिनांक 24.01.2002 के द्वारा दिनांक 23.02.1998 से बीस वर्ष के लिए वैध थी। उसके बाद कार्यालय सहायक खनि-अभियंता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, निम्बाहेडा के पत्र क्रमांक/सखअ/निम्बा/सीसी-1/एम. एल2/1997/2023 दिनांक 27.02.2015 से एम.एम.डी.आर. की धारा



8 ए में किये गये संशोधन अनुसार खनन पट्टे की अवधि वृद्धि दिनांक 31.03.2030 तक बढ़ा दी गई है। जो कि चूना-पत्थर खदान निम्बाहेडा-अहीरपुरा (मुरलिया ब्लॉक) के नाम से 652.3125 हैक्टेयर भू-क्षेत्र का खनन पट्टा स्वीकृत शब्द है। जिसकी संविदा पंजीयन दिनांक 10.07.2002 को हुआ। वांछित भूमि खनन पट्टे की लीज सीमा के अन्दर होकर मुरलिया ब्लॉक के चालु खनन पीट के नजदीक होकर डेन्जर जोन में है, इसे खनन कार्य हेतु ली जाना आवश्यक है। खनन पट्टा क्षेत्र आठ ग्रामों की सीमाओं में निम्बाहेडा, ईशाकपुरा, अहीरपुरा, बोराखेडी, लक्ष्मीपुरा, फाचर अहिरान एवं मांगरोल ग्राम की सीमा में स्थित होकर संलग्न खसरा मानचित्र में A', B', C', D', E', F', G', H', I', J', K', L' बिन्दुओं के मध्य स्थित है। खनन क्षेत्र की सीमा में स्थित आराजी अप्रार्थी डमरलाल पुत्र कालूराम ब्राह्मण निवासी फाचर अहिरान के नाम पर ग्राम फाचर अहिरान की वर्तमान जमाबंदी खाता संख्या 90 में उल्लेखित कृषि भूमि के आराजी संख्या 668 रकबा 0.11 हैक्टेयर दर्ज रिकार्ड है। उक्त भूमि अप्रार्थी संख्या 1 के नाम खातेदारी में दर्ज होकर अप्रार्थी संख्या 2 बडौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, शाखा मांगरोल के रहन दर्ज है। उक्त भूमि खदान के लीज क्षेत्र के मध्य होने से इसे आवश्यक रूप से खनन कार्य हेतु सरफेसरेन्ट पर ली जाना जरूरी है। खसरा मानचित्र के अनुसार उक्त भूमि अप्रार्थी के खाते एवं कब्जे काशत में रहने पर प्रार्थी द्वारा खनन कार्य करना असम्भव है। भूमि प्रार्थी कम्पनी के स्वीकृत खनन पट्टा क्षेत्र में होने से प्रार्थी कम्पनी को उक्त भूमि नियमानुसार खनन कार्य के लिए आवश्यकता है। जिसे धारा 89 में ली जाने वाली भूमि को खसरा मानचित्र में लाल रंग से दर्शायी गई है। प्रार्थी कम्पनी नियमानुसार मुआवजा राशि व सोलिशियन राशि का भुगतान करने को तैयार है। अन्त में प्रार्थना की गई कि प्रार्थी कम्पनी की ओर से प्रार्थना पत्र प्रस्तुत है जिसे स्वीकार फरमाया जाकर प्रार्थना पत्र में उल्लेखित ग्राम फाचर अहिरान तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ में स्थित विपक्षीगण की कृषि भूमि कुल किता 1 कुल क्षेत्रफल 0.11 हैक्टेयर भूमि को नियमानुसार मुआवजा प्रदान कराते हुए बिलानाम सरफेसरेन्ट पर खनन प्रयोजनार्थ दिलाई जाने का आदेश प्रदान करावें।

इस पर प्रार्थी कम्पनी के प्रार्थना पत्र को दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्रार्थी को जरिये नोटिस मय नकल प्रार्थना पत्र के तलब किया गया एवं उप-पंजीयक निम्बाहेडा से उक्त ग्राम की सिंचित/असिंचित कृषि भूमि की सड़क के पास अथवा दूर, आबादी से पास एवं दूर की वर्तमान में प्रभावित जिला दर निर्धारण समिति द्वारा अनुमोदित प्रचलित बाजार दरे प्राप्त की गई एवं तहसीलदार निम्बाहेडा से आराजीयात जैरबहस के संबंध में आबादी से दूरी की स्थिति, भूमि में स्थित संरचना, निर्माण, वृक्ष, पत्थर कोट आदि की मौका रिपोर्ट उभय पक्षकारान की उपस्थिति में मौका रिपोर्ट के निर्देश दिये गये।

प्रकरण में उप-पंजीयक निम्बाहेडा द्वारा पत्रांक/पंजीयन/2021/407 दिनांक 30.11.2021 से ग्राम फाचर अहिरान तहसील निम्बाहेडा की कृषि भूमि की वर्तमान प्रचलित बाजार दर प्रति हैक्टेयर प्रस्तुत की गई जो कि शामिल पत्रावली होकर रिकार्ड पर है। तहसीलदार निम्बाहेडा द्वारा पत्रांक/राजस्व/2021/1253 दिनांक



09.12.2021 से प्रकरण में मौका रिपोर्ट दिनांक 06.12.2021 प्रस्तुत की गई जो कि शामिल पत्रावली होकर रिकार्ड पर है।

दिनांक 22.12.2021 को अप्रार्थी संख्या 1 के बाजवूद सूचना के हाजिर नहीं नहीं आने से अप्रार्थी संख्या 1 के विरुद्ध कार्यवाही एक तरफा अमल में लाई गई। अप्रार्थी संख्या 2 की ओर से अधिवक्ता मुकेश सारस्वत हाजिर आये एवं अधिकार पत्र पेश किया जो शामिल पत्रावली है। दिनांक 28.12.2021 को अप्रार्थी संख्या 2 की ओर से जवाब प्रार्थना पत्र पेश किया गया जो शामिल होकर रिकार्ड पर है।

दिनांक 05.01.2022 को उभयपक्ष अधिवक्ता हाजिर आये एवं प्रकरण में बहस पत्रावली का निवेदन कर प्रकरण का निस्तारण आज ही किये जाने की ईशतदुआ की गई। इस पर हाजिर उभयपक्ष अधिवक्ता द्वारा की गई बहस पत्रावली को सुना गया। अधिवक्ता प्रार्थी ने अपनी बहस में प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों को दोहराया एवं बताया कि सर्वप्रथम अधिवक्ता प्रार्थी ने अपनी बहस प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों को दोहराया एवं बताया कि प्रार्थी कम्पनी को सीमेन्ट उत्पादन करने हेतु राजस्थान सरकार के खनन विभाग के आदेश क्रमांक/प-16(49)खान/ गुप-1/97 दिनांक 24.01.2002 के द्वारा दिनांक 23.02.1998 से बीस वर्ष के लिए वैध थी। उसके बाद कार्यालय सहायक खनि-अभियंता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, निम्बाहेडा के पत्र क्रमांक/सखअ/निम्बा/ सीसी-1/एम.एल2/1997/2023 दिनांक 27.02.2015 से एम.एम.डी.आर. की धारा 8 ए में किये गये संशोधन अनुसार खनन पट्टे की अवधि वृद्धि दिनांक 31.03.2030 तक बढ़ा दी गई है। जो कि चूना-पत्थर खदान निम्बाहेडा-अहीरपुरा (मुरलिया ब्लॉक) के नाम से 652.3125 हैक्टेयर भू-क्षेत्र का खनन पट्टा स्वीकृत शब्दा है। जिसकी संविदा पंजीयन दिनांक 10.07.2002 को हुआ। वांछित भूमि खनन पट्टे की लीज सीमा के अन्दर होकर मुरलिया ब्लॉक के चालु खनन पीट के नजदीक होकर डेन्जर जोन में है, इसे खनन कार्य हेतु ली जाना आवश्यक है। खनन क्षेत्र की सीमा में स्थित आराजी अप्रार्थी डमरलाल पिता कालूराम ब्राह्मण निवासी फाचर अहिरान के नाम पर ग्राम फाचर अहिरान की वर्तमान जमाबंदी खाता संख्या 90 में उल्लेखित कृषि भूमि के आराजी संख्या 668 रकबा 0.11 हैक्टेयर दर्ज रिकार्ड है। उक्त भूमि खदान के लीज क्षेत्र के मध्य होने से इसे आवश्यक रूप से खनन कार्य हेतु सरफेसरेन्ट पर ली जाना जरूरी है। खसरा मानचित्र के अनुसार उक्त भूमि अप्रार्थी के खाते एवं कब्जे काशत में रहने पर प्रार्थी कम्पनी द्वारा खनन कार्य करना असम्भव है। प्रार्थी कम्पनी के उक्त खनन क्षेत्र में विपक्षी की खातेदारी एवं कब्जेयाबी की कृषि भूमि प्रार्थी कम्पनी की स्वीकृत लीज क्षेत्र में स्थित होने से प्रार्थी कम्पनी को सीमेन्ट उद्योग के लिये कच्चा माल लाइम स्टोन (सीमेन्ट ग्रेड) की आपूर्ति हेतु खनन-कार्य हेतु आवश्यकता है। विपक्षी की हक एवं हिस्से की खातेदारी की उक्त कृषि भूमि की मुआवजा राशि निर्धारित किये बिना प्रार्थी कम्पनी को सीमेन्ट उत्पादन हेतु आवश्यक कच्चा माल प्राप्त नहीं हो सकेगा, जिससे प्रार्थी कम्पनी द्वारा सीमेन्ट उत्पादन किया जाना सम्भव नहीं हो सकेगा और सीमेन्ट उद्योग पर विपरित प्रभाव



पडेगा। इसलिये राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 89 के प्रावधानों के अनुसार प्रार्थना पत्र में उल्लेखित कृषि भूमि को खनन कार्य हेतु उपयोग में लेने के लिये इसकी मुआवजा राशि का निर्धारण करना आवश्यक है।

इस पर विद्वान अधिवक्ता अप्रार्थी संख्या 2 ने अपनी बहस में जवाब प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों को दोहराया एवं बताया कि विपक्षी बैंक के यहा भारग्रस्त एवं रहन कर विपक्षी संख्या 1 ने किसान क्रेडिट कार्ड ऋण सुविधा ले रखी है। इस ऋण की अदायगी का भार इन आराजीयात पर होने से विपक्षी संख्या 1 के जिम्मे की बकाया ऋण राशि की अदायगी होने पर ही यह आराजीयात भारमुक्त हो पायेगी। इसलिये प्रकरण में निर्धारित किये जाने वाली मुआवजा राशि का भुगतान विपक्षी बैंक को किया जाना आवश्यक है। इसी ईशतदुआ के साथ विद्वान अधिवक्ता अप्रार्थी संख्या 2 ने अपनी बहस समाप्त की।

इस पर बहस के रिवटल में विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी ने बताया कि प्रार्थी कम्पनी का खनन पट्टा क्षेत्र आठ ग्रामों की सीमाओं में निम्बाहेडा, ईशाकपुरा, अहीरपुरा, बोराखेडी, लक्ष्मीपुरा, फाचर अहिरान एवं मांगरोल ग्राम की सीमा में स्थित होकर संलग्न खसरा मानचित्र में A', B', C', D', E', F', G', H', I', J', K', L' बिन्दुओं के मध्य स्थित है। भूमि प्रार्थी कम्पनी के स्वीकृत खनन पट्टा क्षेत्र में होने से प्रार्थी कम्पनी को उक्त भूमि नियमानुसार खनन कार्य के लिए आवश्यकता है। जिसे धारा 89 में ली जाने वाली भूमि को खसरा मानचित्र में लाल रंग से दर्शायी गई है। प्रार्थी कम्पनी नियमानुसार मुआवजा राशि व सोलिशियन राशि का भुगतान करने को तैयार है। प्रार्थी कम्पनी न्यायालय द्वारा पारित अवार्ड के अनुसार विपक्षीगण को उक्त भूमि की मुआवजा राशि प्राप्त कर अन्यत्र भूमि क्रय कर सकेंगे जिससे विपक्षीगण को किसी प्रकार की क्षति नहीं होगी। अतः प्रार्थना पत्र में उल्लेखित भूमि के लिये राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 89 के अन्तर्गत खनन प्रयोजनार्थ मुआवजा राशि का निर्धारण किया जाना न्यायोचित है। उक्त भूमि की मुआवजा राशि का निर्धारण कराया जाकर अवार्ड पारित फरमाया जावे विपक्षी संख्या 1 की विपक्षी संख्या 2 के जिम्मे की बकाया राशि का भुगतान करने का आदेश प्रदान करते हुए उक्त खनन क्षेत्र की भूमि का कब्जा प्रार्थी कम्पनी को दिलाया जावे। अन्त में प्रार्थना की गई कि प्रार्थी कम्पनी की और से प्रार्थना पत्र प्रस्तुत है जिसे स्वीकार फरमाया जाकर प्रार्थना पत्र में उल्लेखित ग्राम फाचर अहिरान तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ में स्थित विपक्षीगण की कृषि भूमि कुल किता 1 कुल क्षेत्रफल 0.11 हैक्टेयर भूमि को नियमानुसार मुआवजा प्रदान कराते हुए बिलानाम सरफेसरेन्ट पर खनन प्रयोजनार्थ दिलाई जाने का आदेश प्रदान करावे। इसी ईशतदुआ के साथ विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी ने अपनी बहस पत्रावली समाप्त की। हमने पत्रावली का आद्यौपांत अवलोकन किया। तहसीलदार निम्बाहेडा से प्राप्त मौका रिपोर्ट का गहनता पूर्वक अवलोकन किया। उप पंजीयक निम्बाहेडा से प्राप्त प्रचलित बाजार दरों का अवलोकन किया। विद्वान उभयपक्ष अधिवक्ता द्वारा की गई बहस पत्रावली का चिंतन-मनन किया। पत्रावली को वास्ते निर्णय रिजर्व किया गया।



पत्रावली वास्ते निर्णय पेश हुई। हमने पत्रावली का आद्यौपांत अवलोकन किया। उभयपक्ष अधिवक्ता द्वारा की गई बहस पत्रावली का मनन किया। पत्रावली पर उपलब्ध समस्त दस्तावेजात अभिलेख का गहनता पूर्वक अध्ययन/परिशीलन किया। हमने राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 89 के प्रावधानों का अवलोकन किया।

89 Right of minerals, mines, quarries and fisheries –

- 1 The right to all minerals, mines and quarries and to all fisheries, navigation and irrigation in and from, a river shall vest in the State Government and the State Government shall, have all powers necessary for the enjoyment of such a right.
- 2 The right to all mines and quarries includes the right of access to land for the purpose of mining and quarrying and the right to occupy such other land as may be necessary for purposes subsidiary thereto, including the erection of offices, workmen's dwellings and machinery. The staking of minerals and deposit of refuse, the construction of roads, railways or tram lines, and any other purposes which the State Government may declare to be subsidiary to mining and quarrying.
- 3 If the State Government has assigned to any person its right over any minerals, mines or quarries, and if for the proper enjoyment of such right, it is necessary that all or any of the powers specified in sub-sections (1) and (2) should be exercised by such person, the Collector may, by an order in writing, subject to such conditions and reservations as he may prescribe; delegate such powers to the person to whom the right has been assigned:
Provided that no such delegation shall be made until notice has been duly served on all persons having rights in the land effected and their objection have been heard and considered.
- 4 If, in the exercise of the right herein referred over any land, the rights of any persons are infringed by the occupation or disturbance of the surface of such land, the State Government or its assignee shall pay to such persons compensation for such infringement and the amount of such compensation shall be calculated by the Collector, or, if this award is not accepted, by the civil court, as nearly as may be in accordance with the provisions of the Rajasthan Land Acquisition Act, 1953 (Rajasthan Act XXIV of 1953).
- 5 No assignee of the State Government shall enter on or occupy the surface of any land without the previous sanction of the Collector, unless the compensation has been determined and tendered to the person whose rights are infringed.
- 6 If any assignee of the State Government fails to pay compensation as provided in sub- section (4), the Collector may recover such compensation



from him on behalf of the person entitled to it, as if it were an arrear of land revenue.

- 7 Any person who without lawful authority extracts or removes minerals from any mine or quarry, the right to which vests in and has not been assigned by the State Government, shall without prejudice to any other section that may be taken against his liable, on the order in writing of the Collector to pay a penalty not exceeding a sum calculated at the rate of fifty rupees per ton, or a fraction thereof, of the minerals so extracted or removed:

Provided that if the sum so calculated is less than one thousand rupees, the penalty may be such larger sum not exceeding on thousand rupes as the Collector may impose.

राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 89 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उक्त प्रार्थना पत्र की क्षेत्राधिकार इस न्यायालय को प्राप्त है। ऐसी स्थिति में प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र इस न्यायालय में पोषणीय पाया है। अधिनियम की धारा 89(2) के अनुसार सभी खानों और खदानों के अधिकार में खनन और उत्खनन के उद्देश्य के लिए भूमि तक पहुंच का अधिकार और कार्यालयों, कामगारों के आवास और मशीनरी के निर्माण सहित अन्य सहायक भूमि पर कब्जा करने का अधिकार शामिल है। खनिजों को जमा करना और कचरा जमा करना, सड़कों, रेलवे या ट्राम लाइनों का निर्माण, और कोई अन्य उद्देश्य जिसे राज्य सरकार खनन और उत्खनन के लिए सहायक घोषित कर सकती है। इसके साथ अधिनियम की धारा 89(4) अनुसार किसी भी भूमि पर निर्दिष्ट अधिकार के प्रयोग में, किसी व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन ऐसी भूमि की सतह के कब्जे या गड़बड़ी से होता है, तो राज्य सरकार या उसका समनुदेशिती ऐसे व्यक्तियों को इस तरह के उल्लंघन के लिए मुआवजे का भुगतान करेगा और ऐसे मुआवजे की राशि की गणना कलक्टर द्वारा की जाएगी। हस्तगत प्रकरण में अप्रार्थी के विरुद्ध कार्यवाही एक तरफा अमल में लाये जाने से अप्रार्थी की ओर से प्रार्थना पत्र का किसी भी प्रकार से खण्डन पत्रावली पर उपलब्ध नहीं है। हमने प्रार्थना पत्र के समर्थन में प्रस्तुत दस्तावेजात का गहनता पूर्वक परिशीलन किया। आराजीयात जैरबहस के अप्रार्थी अभिलिखित खातेदार काश्तकार है। जिसकी पुष्टि पत्रावली पर उपलब्ध नकल जमाबंदी से होती है। प्रार्थी कम्पनी को सीमेन्ट उत्पादन करने हेतु राजस्थान सरकार के खनन विभाग के आदेश क्रमांक/प-16(49)खान/ गुप-1/97 दिनांक 24.01.2002 के द्वारा दिनांक 23.02.1998 से बीस वर्ष के लिए वैध थी। उसके बाद कार्यालय सहायक खनि-अभियंता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, निम्बाहेडा के पत्र क्रमांक/सखअ/निम्बा/सीसी-1/एम. एल2/1997/2023 दिनांक 27.02.2015 से एम.एम.डी.आर. की धारा 8 ए में किये गये संशोधन अनुसार खनन पट्टे की अवधि वृद्धि दिनांक 31.03.2030 तक बढ़ा दी गई है। जिसकी छाया प्रति पत्रावली पर उपलब्ध है। अप्रार्थी की आराजीयात जैरबहस प्रार्थी कंपनी की उक्त लीज क्षेत्र में स्थित है जिसकी पुष्टि पत्रावली पर उपलब्ध नक्शा लीज क्षेत्र से होती है। ऐसी स्थिति में प्रार्थी कंपनी द्वारा इस तथ्य को निर्विवाद से



साबित कराया गया है कि अप्रार्थी की खातेदारी आराजीयात जैरबहस प्रार्थी कंपनी की स्वीकृत लीज क्षेत्र में स्थित है। हस्तगत प्रकरण में प्रार्थी कम्पनी द्वारा खनन कार्य में अप्रार्थी की कृषि भूमि प्रार्थी कम्पनी की माईनिंग लीज एरिया में स्थित होकर कम्पनी को उक्त भूमि की खनन प्रयोजनार्थ आवश्यकता होना अवगत कराया गया है ऐसी स्थिति में राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 89 के तहत प्रार्थी कम्पनी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र को स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है एवं अप्रार्थी की खातेदारी एवं कब्जेयाबी की कृषि भूमि को खनन प्रयोजनार्थ से भूमि का उचित मुआवजा निर्धारण किया जाना उचित प्रतीत होता है।

कृषि भूमि को खनन प्रयोजनार्थ लिये जाने के संबंध में हमने पत्रावली पर उपलब्ध तहसीलदार निम्बाहेडा द्वारा प्रस्तुत मौका रिपोर्ट का अवलोकन किया। तहसीलदार निम्बाहेडा द्वारा प्रस्तुत मौका रिपोर्ट में अप्रार्थीगण की खातेदारी आराजीयात आराजी संख्या खसरा नम्बर 668 क्षेत्रफल 0.11 हैक्टेयर कृषि भूमि में स्थित संरचना व उनकी कीमत का विवरण प्रस्तुत किया गया है जो कि निम्नानुसार है :-

क्रमांक	संरचना विवरण	कीमत संरचना(रुपये में)
1.	वृक्ष	11000/-
2.	पत्थर कोट	10000/-
संरचनाओं का कुल योग		21000/-

हमने उप पंजीयक निम्बाहेडा द्वारा प्रस्तुत की गई इस ग्राम की सिंचित/असिंचित/बीड़ भूमि की आबादी एवं सड़क से पास तथा दूर की जिला दर निर्धारण समिति द्वारा अनुमोदित दरों का अवलोकन किया। उप पंजीयक द्वारा इस भूमि की उच्चतम सिंचित, सड़क व आबादी के पास की दर 10,05,048/- रुपये प्रति हैक्टेयर होना बताया है, किन्तु हम भूमि का खनन प्रयोजनार्थ हेतु उपयोग में लिये जाने से जिला दर निर्धारण समिति द्वारा निर्धारित दरों की दुगुनी दर 20,10,096/- रुपये प्रति हैक्टेयर से भूमि का मुआवजा निर्धारित करना उचित मानते हैं।

ग्राम	आराजी नम्बर	क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	मुआवजा हेतु निर्धारित दर प्रति हैक्टेयर (रुपये में)	देय राशि (रुपये में)
फाचर अहिरान	668	0.11	2010096	221111/-
कुल किता - 1		कुल क्षेत्रफल 0.11 हैक्टेयर	कीमत संरचना	21000/-
			योग	242111/-
			100 % सोलिशियम	242111/-
			कुल देय राशि	484222/-
अक्षरे चार लाख चौरासी हजार दौ सौ बाईस रुपये मात्र/-				

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 89(4) राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 को



स्वीकार किया जाता है एवं उपरोक्त तालिका अनुसार अप्रार्थीगण की खातेदारी एवं कब्जेयाबी की कृषि भूमि का खनन प्रयोजनार्थ उपयोग में लिये जाने हेतु भूमि का मुआवजा निर्धारण किया जाता है। इसके साथ ही भूमि वर्तमान में रहन दर्ज रिकार्ड है, जिससे आराजीयात को भारमुक्त कराया जाना आवश्यक है अतः प्रार्थी कम्पनी उपरोक्त राशि के भुगतान हेतु दो पृथक्-पृथक् चैक संबंधित बैंक एवं खातेदार के नाम, तहसीलदार निम्बाहेडा को उपलब्ध करावें। तहसीलदार उक्त आराजी के संबंध में राजस्व अभिलेख में दर्ज खातेदार एवं वर्तमान कब्जे के संबंध में संतुष्टि के उपरांत संबंधित को राशि का भुगतान कर प्रमाणित करेंगे। उपरोक्त भूमि खनन कार्य करने हेतु उपयोग में लिये जाने से तहसीलदार द्वारा सरफेस रेंट राशि प्रार्थी कम्पनी से वसूल कर भूमि को बिलानाम खनन कार्य करने हेतु प्रार्थी कम्पनी के नाम अंकन करने के पश्चात् प्रार्थी कम्पनी द्वारा प्रचलित नियमों, निर्देशों, लीज डीड व विभागीय परिपत्रों के तहत भूमि खनन कार्य करने हेतु उपयोग में ली जा सकेगी। निर्णय की प्रति तहसीलदार निम्बाहेडा को नियमानुसार पालना बाबत् भिजवाई जावें। पत्रावली की गणना निर्णित इन्द्राज की जाकर बाद आवश्यक कार्यवाही के अभिलेखागार भिजवाई जावें।

यह निर्णय खुले न्यायालय में आज दिनांक **05.01.2022** को लिखाया जाकर सुनाया गया।



(तारा चन्द मीणा)
जिला कलक्टर,
चित्तौड़गढ़